



सत्यमेव जयते



अमर
जवान

गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

26 जनवरी 2012 (माघ 6, 1933)
26 January 2012 (6 Magha, 1933)





गणतंत्र दिवस परेड **Republic Day Parade**

26 जनवरी 2012 (माघ 6, शक संवत् 1933)
26 January 2012 (6 Magha, Saka Samvat 1933)

कार्यक्रम

Programme

0957 बजे राष्ट्रपति का, मुख्य अतिथि, थाईलैंड किंगडम के प्रधानमंत्री के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन।

0957

The President, accompanied by the Chief Guest, Prime Minister of The Kingdom of Thailand arrives in State.

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि की अगवानी।

The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तथा मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान।

The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the rostrum.

राष्ट्र-ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है।

The Republic Day Parade commences.

सांस्कृतिक झांकी।

The Cultural Pageant

मोटर साइकलों पर करतब।

Motor Cycle Display

विमानों द्वारा सलामी।

Flypast

राष्ट्रीय सलामी।

National Salute

राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि के साथ राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

The President, accompanied by the Chief Guest, departs in State.

परेड क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलिकाप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप-कमांडर

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

सेना

सवार दस्ते

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

टैंक टी-72

कैरियर मोरटार ट्रैकेड (सीएमटी)

स्मर्च मल्टी बैरल राकेट लांचर प्रणाली

पिनाका मल्टी बैरल राकेट लांचर प्रणाली

फुल विडथ माइन प्लो (एफ डब्ल्यू एम पी)

परमाणु जैविक रसायन जल शुद्धिकरण प्रणाली

इलैक्ट्रॉनिक युद्ध जैमर

सेना श्वान-दिलेर सशक्त बल

का प्रदर्शन करने वाली

रीमाउन्ट तथा वैटनरी कोर (आरवीसी) की झांकी

उन्नत हल्के हेलिकाप्टरों द्वारा सलामी

The Order of March

Showering of flower petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

Army

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanized Columns

Tank T-72

Carrier Mortar Tracked (CMT)

Smerch Multi Barrel Rocket
Launcher System

Pinaka Multi Barrel Rocket
Launcher System

Full Width Mine Plough (FWMP)

Nuclear Biological Chemical
Water Purification Systems

Electronic Warfare Jammer

Remount & Veterinary Corps
(RVC) Tableau
Army Dogs- " The Brave Heart Force"

Fly Past by Advance
Light Helicopters

मार्च करती टुकड़ियां

पैराशूट रेजिमेंट

तोपखाना केन्द्र
मद्रास इंजीनियर ग्रुप तथा केन्द्र: बैंड धुन
"अर्जुन"

बंगाल इंजीनियर ग्रुप

गार्डस ब्रिगेड

मुम्बई इंजीनियर ग्रुप तथा केन्द्र
मेकनाइज्ड इनफैंटरी रेजिमेंट केन्द्र: बैंड धुन
"थिमैया"

कुमाऊं रेजिमेंट

असम रेजिमेंट

13 ग्रेनेडियर
राजपूताना राइफल रेजिमेंटल केन्द्र: बैंड धुन
"गंगोत्री"

महार रेजिमेंट

11 गोरखा राइफल्स

11 गोरखा राइफल रेजिमेंटल केन्द्र
14 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र: बैंड धुन
"वीर गोरखा"

मिलिट्री पुलिस कोर

Marching Contingents

Parachute Regiment

Artillery Centre
Madras Engineer Group & Centre: Band playing
"Arjuna"

Bengal Engineer Group

Brigade of the Guards

Bombay Engineer Group & Centre
Mechanised Infantry Regiment
Centre: Band playing
"Thimmaya"

Kumaon Regiment

Assam Regiment

13 Grenadiers
Rajputana Rifles Regimental Centre : Band playing
"Gangotri"

Mahar Regiment

11 Gorkha Rifles

11 Gorkha Rifles Regimental Centre : Band playing
14 Gorkha Training Centre "Veer Gorkha"

Corps of Military Police

नौसेना**Navy**नौसेना ब्रास बैंड
मार्च करती सैन्य टुकड़ी: बैंड धुन
"जय भारती"Naval Brass Band
Marching Contingent: Band playing
"Jai Bharti"झांकी - "भारतीय नौसेना- सुदृढ़ राष्ट्र के लिए सुरक्षित समुद्र
तथा सुरक्षित तट"Tableau- "Indian Navy-Safe Seas and Secure Coasts
for A Strong Nation"**वायुसेना****Air Force**वायुसेना बैंड
मार्च करती वायु सेना टुकड़ी: बैंड धुन
"एयर बैटल"Band Contingent
Marching Contingent: Band playing
"Air Battle"

वाहन दस्ता - "पीपल फर्स्ट मिशन आलवेज"

Vehicular Column - "People First Mission Always"

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, उपस्कर टुकड़ी

अग्नि - IV मिसाइल
प्रहार मिसाइल
रुस्तम -1 यू ए वी
झांकी - बर्फ एवं हिम स्खलन आपदा तथा उनके न्यूनीकरण के लिए स्कीम

DRDO Equipment Columns

AGNI-IV Missile
PRAHAAR Missile
RUSTOM- 1 UAV
Tableau - Snow & Avalanche Hazards & their Mitigation Scheme

भूतपूर्व-सैनिक

39 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र : बैंड धुन
तथा "देशों का
1 इलेक्ट्रिकल मेकेनिकल इंजीनियरिंग केन्द्र सरताज भारत"
भूतपूर्व-सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

Ex-Servicemen

39 Gorkha Training Centre : Band playing
& "Deshon ka Sartaj
1 Electrical Mechanical Bharat"
Engineering Centre
Ex-Servicemen Marching Contingent

अर्ध-सैनिक एवं अन्य सहायक सिविल बल

बैंड : सीमा सुरक्षा बल : बैंड धुन
सीमा सुरक्षा बल की मार्च "विजय भारत"
करती हुई टुकड़ी
बैंड : सीमा सुरक्षा बल ऊंट : बैंड धुन
"हम हैं सीमा
सुरक्षा बल"
असम राइफल्स की मार्च करती टुकड़ी
बैंड : असम राइफल्स : बैंड धुन
तटरक्षक बल की मार्च "असम राइफल्स
करती टुकड़ी का गीत"
बैंड : केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल : बैंड धुन
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की "सेवा भक्ति का
मार्च करती टुकड़ी यह प्रतीक"
बैंड : भारत-तिब्बत सीमा पुलिस : बैंड धुन
भारत-तिब्बत सीमा पुलिस "कदम-कदम
की मार्च करती हुई टुकड़ी बढ़ाए चल"
बैंड : केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल : बैंड धुन
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल "सारे जहां से
की मार्च करती टुकड़ी अच्छा"
बैंड : सशस्त्र सीमा बल : बैंड धुन
सशस्त्र सीमा बल "जोश भरा है
की मार्च करती टुकड़ी सीने में"

Para-Military And Other Auxiliary Civil Forces

Band: BSF : Band playing
BSF Marching Contingent "Vijay Bharat"
BSF Camel Contingent
Band: BSF Camel : Band playing
"Hum Hai Seema
Suraksha Bal"
Assam Rifles Marching Contingent
Band: Assam Rifles : Band playing
Coast Guard Marching "Assam Rifles
Contingent Song"
Band: CRPF : Band playing
CRPF Marching Contingent "Seva Bhakti Ka
Yeh Prateek"
Band: ITBP : Band playing
ITBP Marching Contingent "Kadam Kadam
Baraye Chal"
Band: CISF : Band playing
CISF Marching Contingent "Saare Jaahan
Se Aachha"
Band: SSB : Band playing
SSB Marching Contingent "Josh Bhara Hai
Sine Main"

8

बैंड : रेलवे सुरक्षा बल
रेलवे सुरक्षा बल की
मार्च करती टुकड़ी

: बैंड धुन
"कदम-कदम
बढ़ाए जा"

Band: RPF
RPF Marching Contingent

: Band playing
"Kadam Kadam
Badaye Ja"

बैंड : दिल्ली पुलिस
दिल्ली पुलिस की
मार्च करती टुकड़ी

: बैंड धुन
"दिल्ली पुलिस"

Band: Delhi Police
Delhi Police Marching
Contingent

: Band playing
"Delhi Police"

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी)

National Cadet Corps (NCC)

बैंड : राष्ट्रीय कैडेट कोर के छात्र
छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी

: बैंड धुन
"कदम-कदम
बढ़ाए जा"

Band: Boys (NCC)
Boys Marching Contingent

: Band playing
"Kadam Kadam
Badhaye Ja"

बैंड : राष्ट्रीय कैडेट कोर की छात्राएं
छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी

: बैंड धुन
"सारे जहां
से अच्छा"

Band: Girls (NCC)
Girls Marching Contingent

: Band playing
"Saare Jahan
Se Aachha"

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस)

National Service Scheme (NSS)

सामूहिक पाइप और ड्रम
राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती टुकड़ी

: बैंड धुन
"इंडिया गेट"

Massed Pipes & Drums

: Band playing
'India Gate'

National Service Scheme Marching Contingent

सांस्कृतिक प्रस्तुति

The Cultural Pageant

झांकियां : तेईस

Tableaux : Twenty three

खुली जीपों में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

National Bravery Award Winning Children on Jeeps

बच्चों की प्रस्तुति

Children's Pageant

स्कूली बच्चों के कार्यक्रम :

School Children Items :

- केन्द्रीय विद्यालय आर. के. पुरम, नई दिल्ली
- दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, थंजावूर
- पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता
- राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय हस्तसाल, दिल्ली
- उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

- Kendriya Vidyalaya, R.K. Puram, New Delhi
- South Zone Cultural Centre, Thanjavur
- Eastern Zone Cultural Centre, Kolkata
- Govt. Sarvodaya Kanya Vidyalaya Hastal, Delhi
- North Central Zone Cultural Centre, Allahabad

मोटर साइकिलों पर करतब : सीमा सुरक्षा बल—जांबाज

Motor Cycle Display: Border Security Force-Jaanbaaz

विमानों द्वारा सलामी*

FLY-PAST*

गुब्बारों का छोड़ा जाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग

Release of balloons: Indian Meteorological Department

* मौसम अनुकूल रहने पर।

* If weather conditions permit.

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 63वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत की प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग बिरंगी झांकियों का वर्ण-विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं का चित्रण करता है। इन झांकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु-शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

Cultural Pageant

Today, India celebrates its 63rd Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress; it symbolises both India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India, capturing both the beauty of our landscape and our architectural heritage.



शांतिनिकेतन—शांति का आवास

पश्चिम बंगाल की झांकी का विषय आश्रम नगरी शांतिनिकेतन है जो महान कवि-दार्शनिक रवीन्द्रनाथ ठाकुर की उन्नत वैश्विक शिक्षा और संस्कृति केन्द्र के चिंतन का द्योतक है एवं विश्व भारती के नाम से जाना जाता है

शांतिनिकेतन न केवल संस्कृति और लोकाचार का केन्द्र है बल्कि वहाँ सर्वत्र उत्कृष्ट वास्तुकला दृष्टिगत होती है। शांतिनिकेतन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, नन्दलाल बोस, रामकिंकर बैज तथा बिनोद बिहारी मुखोपाध्याय जैसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों द्वारा बनाई गई मूर्तियाँ, विभिन्न चित्र, मयुरल (छोटे-छोटे टाईलों के ब्लॉक से दीवार लेखनी कलाकृति), और कलाकृतियाँ हैं। झांकी में उस समय के महान दिग्गजों की कलाकृतियों के साथ-साथ प्रसिद्ध मूर्तिकार रामकिंकर की सुजाता व मिल का सायरन नामक दो असाधारण मूर्तियों को भी प्रदर्शित किया गया है। 'उपासना गृह' (प्रार्थना हाल) को झांकी के अंत में प्रदर्शित किया गया है।

झांकी में रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा शुरू किए गए वार्षिक वसंत उत्सव को भी दर्शाया गया है जिसमें विश्वभारती के छात्र व शिक्षक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। एक पूर्ण रूप से खिला हुआ हरसिंगार का वृक्ष उत्सव के वातावरण को प्रदर्शित कर रहा है।

Shantiniketan - The abode of peace

The 'Ashram' town of Shantiniketan, the theme of the tableau of West Bengal, symbolizes the 'avant garde' vision of an international educational and cultural institution, conceptualized by the great poet-philosopher Rabindranath Tagore and now known as Visva-Bharati.

Shantiniketan houses splendid sculptures, frescoes, murals and paintings by intellectuals like Tagore, Nandalal Bose, Ramkinkar Baiz and Binodbehari Mukhopadhyaya. 'Sujata' and 'Mill Call', two famous sculptures of Ramkinkar, have been showcased in the Tableau as well as some paintings of the stalwarts of the period. The 'Upasana Griha' (Prayer Hall) has also been showcased.

The Tableau also depicts the annual 'Basanta Utsav' (Spring Festival) initiated by Tagore in which students and teachers of Visva-Bharati take an active part. A feeling of festivity has been created with a 'Palas' (Flame of the Forest) tree in full bloom.

—पश्चिम बंगाल

—WEST BENGAL

श्रीनगर की स्थापत्य विरासत

जम्मू एवं कश्मीर राज्य की झांकी में श्रीनगर शहर की वास्तुकलात्मक विरासत दर्शाई गई है। झांकी के अग्रभाग में भूतपूर्व शासक जैनुल अबिदीन जिन्हें आमतौर पर बुदशाह के नाम से जाना जाता है, की मां के मकबरे को दर्शाया गया है। झेलम नदी के किनारे स्थित श्रीनगर शहर का यह भव्य स्मारक पांच गुम्बदों वाला एक भवन है, जो पक्की ईंटों से बना हुआ है तथा जिसमें नीले रंग की टाइलें जड़ी हुई हैं। यह मध्यकालीन युग की वास्तुकलात्मक विरासत को प्रदर्शित करता है।

झांकी में दिखाए गए पुराने घर-मकान श्रीनगर की अद्भुत वास्तुकलात्मक विरासत को दर्शा रहे हैं। घरों का निर्माण अधिकांशतः ईंटों और लकड़ी से किया गया है। इन घरों की नींव बिना सहारे वाली लकड़ी के बने बीमों पर रखी गई है जो स्थापत्य की एक खास तकनीक है जिससे भवन भूकम्परोधी हो जाते हैं। छज्जे लकड़ी के गुटकों पर बाहर की ओर निकले होते हैं और आमतौर पर उन्हें 'पिंजराकारी' (एक किस्म की काष्ठ कला) से सजाया जाता है। कभी-कभी घर भी एक-दूसरे से पुल से जुड़े होते हैं जिन्हें 'पिल्ला' कहा जाता है ताकि शादी-विवाह समारोहों और अन्य त्यौहारों के अवसर पर जगह का इस्तेमाल किया जा सके। भिन्न-भिन्न धर्म, सम्प्रदाय के लोगों को उनके परंपरागत वेशभूषा में दर्शाया गया है। ये लोग रोजमर्रा के कार्यकलापों में व्यस्त हैं जैसे कि रबाब पर आदमी, छक्री, शाल बुनाई, सब्जी बेचने वाला आदि। परंपरागत साज-सम्पत्तियों जैसे की कांगड़ी, तुम्बकनारी, नामदा और कार्पेट को भी दर्शाया गया है।

—जम्मू एवं कश्मीर

Architectural Heritage of Srinagar

The tableau of the State of Jammu & Kashmir depicts the architectural heritage of Srinagar city. The front portion depicts the tomb of the mother of former ruler Zainul Abidin, popularly known as Budshah. This unique monument of Srinagar city situated on the bank of the Jhelum is a five-domed structure which is made of baked bricks and studded with blue tiles. It depicts the architectural heritage of the medieval period.

The old houses shown in the tableau indicate the unique architectural heritage of Srinagar. Construction of houses is mostly in brick and wood. The plinth is laid on nail-less wooden beams which is a remarkable architectural technique, since it makes the structure earthquake resistant. Balconies stand out on wooden logs and are often decorated with Pinjrakari (a kind of wood craft). Sometimes the houses are also connected with each other by a "connecting bridge" called "Pillaw" for sharing the space for marriage ceremonies and other festive occasions. People belonging to different religious faiths are shown in their traditional attires engaged in day to day activities like a man on Rabab, Chhakri, shawl knitting, vegetable seller etc. Traditional props like Kangri, Tumbaknari, Namda and carpet are also displayed.

-JAMMU & KASHMIR





छत्तीसगढ़ की परम्परागत झिंझरी और दोंदकी कला

छत्तीसगढ़ राज्य की झांकी छत्तीसगढ़ की परम्परागत झिंझरी और दोंदकी मृदाशिल्प को प्रदर्शित करती है। इस झांकी में छत्तीसगढ़ के मृदा शिल्प कलाकारों स्व. सोनाबाई राजवार, दरोगराम और आत्मादास मानिकपुरी की शिल्प कृतियों को प्रदर्शित किया गया है। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं द्वारा वर्षों से मिट्टी की अद्भुत शिल्प कला की रचना की जाती रही है। इस कला को देश और विदेश में ख्याति तब मिली जब सरगुजा जिले के पुहपुटरा ग्राम की निवासी स्व. श्रीमती सोनाबाई ने परम्परागत भित्ति चित्र तथा हस्त शिल्प कला से क्षेत्र का नाम देश और विदेशों में रोशन किया। स्व. सोनाबाई राजवार आदिवासी परम्परागत मिट्टी शिल्प की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कला शिल्पी थीं।

इसमें पक्षियों, वहां के लोगों और वनस्पतियों को दर्शाया गया है जो जनजातीय जीवन के शाश्वत आकर्षण को प्रदर्शित करता है।

Traditional Jhinjhari and Dondaki Art of Chhattisgarh

The tableau of Chhattisgarh depicts the traditional Jhinjhari and Dondaki art of Chhattisgarh. This tableau showcases the clay work by artistes Late Sonabai Rajwar, Darogaram and Atmadas Manikpuri from Chhattisgarh. Women in rural areas of Chhattisgarh have been decorating walls of their dwellings with clay during festive seasons for years. But this ancient art form received national and international recognition through the late Sonabai Rajawar of Puhaputara village in Chhattisgarh's Sarguja district. Sonabai is an internationally-acclaimed artist of traditional tribal clay art.

The tableau Portrays various aspects of this art form. It depicts, birds, people and flora and reflects the immortal charm of tribal life.

—छत्तीसगढ़

—CHHATTISGARH

महाराष्ट्र पर्यटन

महाराष्ट्र राज्य देश का एक उच्च सांस्कृतिक धरोहर, नैसर्गिक आश्चर्य और ऐतिहासिक स्मारकों से भरपूर इस राज्य की पर्यटन की दृष्टि से उपयुक्त हम आकर्षक झाँकी प्रजासत्ताक दिन के अवसर पर प्रस्तुत कर रहे हैं। 2011-2012 का वर्ष "असीम महाराष्ट्र" यह घोष वाक्य के साथ महाराष्ट्र में पर्यटन वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

"महाराष्ट्र" शब्द का शब्दशः अर्थ विशाल राज्य है और महाराष्ट्र का पर्यटन इस नाम को सार्थक ठहराता है। पुरातन गुफा, मंदिर, स्वच्छ समुद्री किनारे, पुरातन किले और स्मारक, वैभवशाली वनसंपदा और वनजीव संपदा, तीर्थस्थल, त्यौहार, कला और संस्कृति की गौरवशाली धरोहर महाराष्ट्र को मिली है।

इस झाँकी के माध्यम से एलोरा स्थित कैलास मंदिर और भगवान शिव के तांडव नृत्य की सुन्दरता का अवलोकन करें और अनुभूत करें और महाराष्ट्र पर्यटन की सुंदरता का अनुभव करें।

—महाराष्ट्र

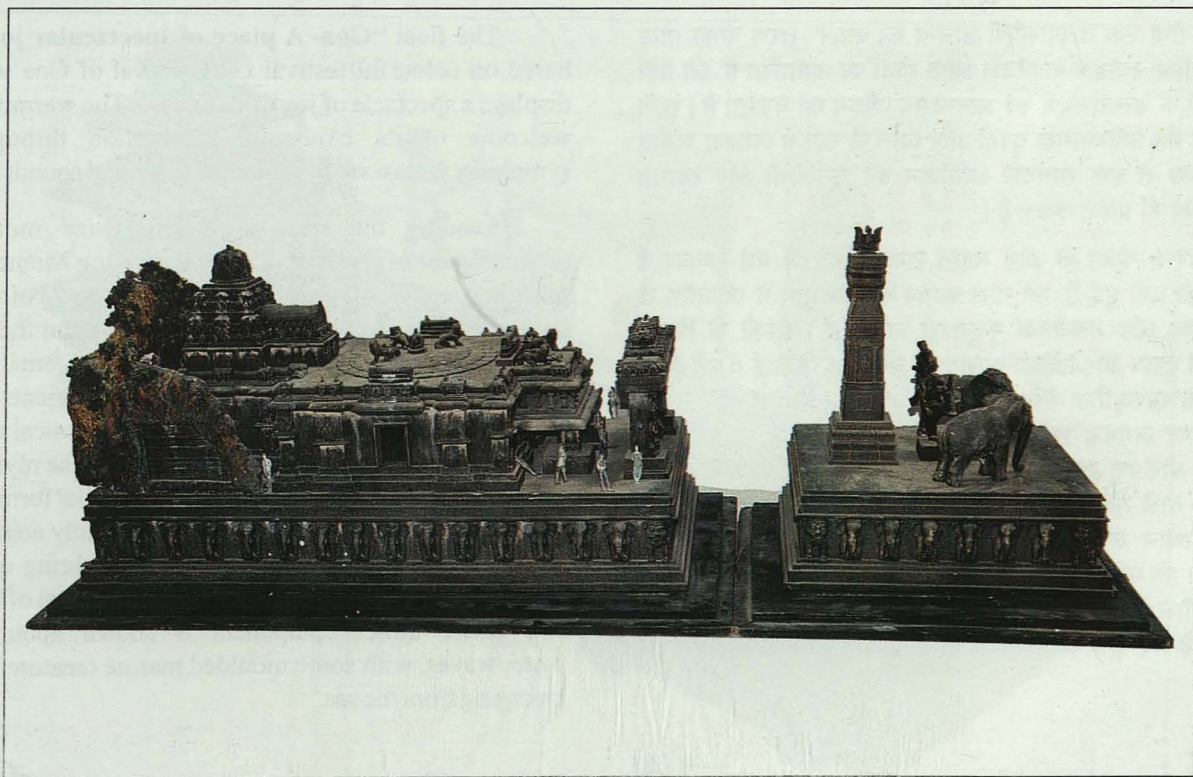
Maharashtra- Tourism

The State of Maharashtra with its rich culture, natural wonders and historical monuments, displays Maharashtra as an attractive tourist destination since it is celebrating 2011-12 as a Tourism Year with a slogan – "MAHARASHTRA- UNLIMITED".

The tourism of Maharashtra truly unfurls the symbolic spirit of the State's name which literally means "Grand State". Maharashtra abounds in numerous tourist attractions ranging from ancient cave temples, unspoiled beaches, ancient forts and monuments, forests and wild life, hill stations, pilgrimage centres and a rich tradition of festivals, art and culture.

So watch and feel the Beauty of Kailash Temple of Ellora and Lord Shiv's Dance through this float, feel the beauty of Maharashtra Tourism.

- MAHARASHTRA





गोवा—उल्लासपूर्ण आनन्द का स्थान

“गोवा एक उल्लासपूर्ण आनन्द का स्थल” तरण नौका गोवा के मनमोहक त्यौहार कार्निवल ऑफ गोवा पर आधारित है, जो वहाँ के लोगों के उल्लासपूर्ण एवं आनन्दमय जीवन को दर्शाता है। साथ ही साथ यह प्रतीकात्मक दृश्यों और ध्वनि के रूप में लयबद्ध संगीत के माध्यम से इस शानदार आयोजन की गर्मजोशी और स्वागत भावना को भी प्रकट करता है।

तरण—नौका के आगे महान राजा मोमो की बड़े आकार में मुखाकृति बनी हुई है, जो नीले सागर की पृष्ठभूमि में जीवंतता के साथ भव्य और मनमोहक मुकुट से जड़ित है। झांकी के पिछले हिस्से में पुरुष और महिला कलाकारों के समूह दिखाई दे रहे हैं जो आकर्षक सांस्कृतिक वेशभूषा में वाद्य यंत्र बजा रहे हैं और उसके संगीत पर लयबद्ध होकर नृत्य कर रहे हैं। उनके परे मनमोहक मुखौटों और पशु आकृतियों तथा हरे-भरे पेड़-पौधों के बीच सूर्य के विशाल गोले के नीचे दिखाई देती मोमो राजा की आकृति जीवन और उत्थान को जीवंत बनाती है। झांकी के अंत में गवल के अग्रभाग की मूर्ति बनाई गई है जो गोवा का राजकीय पशु है। संपूर्ण झांकी नीले जल/तरंगों की पृष्ठभूमि में प्रदर्शित की गई है जिसके साथ गढ़े गए कुछ जलीय जीव भी हैं मानों वे समुद्र से बाहर निकल रहे हों।

—गोवा

Goa-A place of spectacular joy

The float “Goa- A place of spectacular joy” is based on colourful festival i.e. Carnival of Goa which displays a spectacle of joy of its people. The warmth and welcome of its exuberant celebration through a symphony fantasized in symbolic sights and sounds.

Leading the float is a large size moulded replica/figure of the face of legendary King Momo (the presiding entity of Carnival) with rich and colourful crown with an element of animation, set upon the blue waters of the sea followed by an ensemble of female and male performers, playing musical instruments and dancing to captivating tunes, in gorgeous classical attire; overlooking them the figure of King Momo (the mythical King of Carnival) amidst exotic masks, animal forms and green foliage, beneath a huge face of Sun duly animated to suggest upward movement and life; to bring up the rear, a moulded head of a bison (the State animal of Goa). The entire trailer component is shown upon blue water/waves, with some moulded marine creatures as if emerging from the sea.

-GOA

भूताराधने

भूताराधने पवित्र आत्मा की पूजा की एक प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा है जो तटीय कर्नाटक में अत्यन्त लोकप्रिय है। भूतो की पूजा एक सामाजिक, सांस्कृतिक लोक परिपाटी है। जो अपनी भव्यता व रंग बिरंगे परिधानों, मुखौटो, भड़कीले साज-श्रृंगार के कलात्मक सौन्दर्य के साथ ही मनोरंजक संगीत, रोचक, वर्णनात्मक संवाद शैली, लोक नृत्यों, परालौकिकता व भविष्यवाणी के लिए विख्यात है।

झांकी के आगे वाले हिस्से में मलाराया भूता को प्रस्तुत किया गया है जो एक वनों के देवता तथा मानव मात्र के बेहतरीन संरक्षक है और यह लोगों की फसलों, पशुओं व उनकी सम्पत्तियों की सुरक्षा तथा देखभाल करता है। झांकी के पिछले हिस्से में कोटी-चेन्नय्या नामक जुड़वा नायक हैं जो अन्याय के खिलाफ संघर्ष के लिये जाने जाते हैं तथा उनको गरीबों व पिछड़े समुदाय के लोगों के हितों का रक्षक माना जाता है। झांकी में प्रदर्शित कलात्मक के काष्ठ के रथ पूजा स्थल या ब्रह्मगुड़ी प्रदर्शित भूता के चित्र केवल एक बोलती दृश्यावली मात्र है।

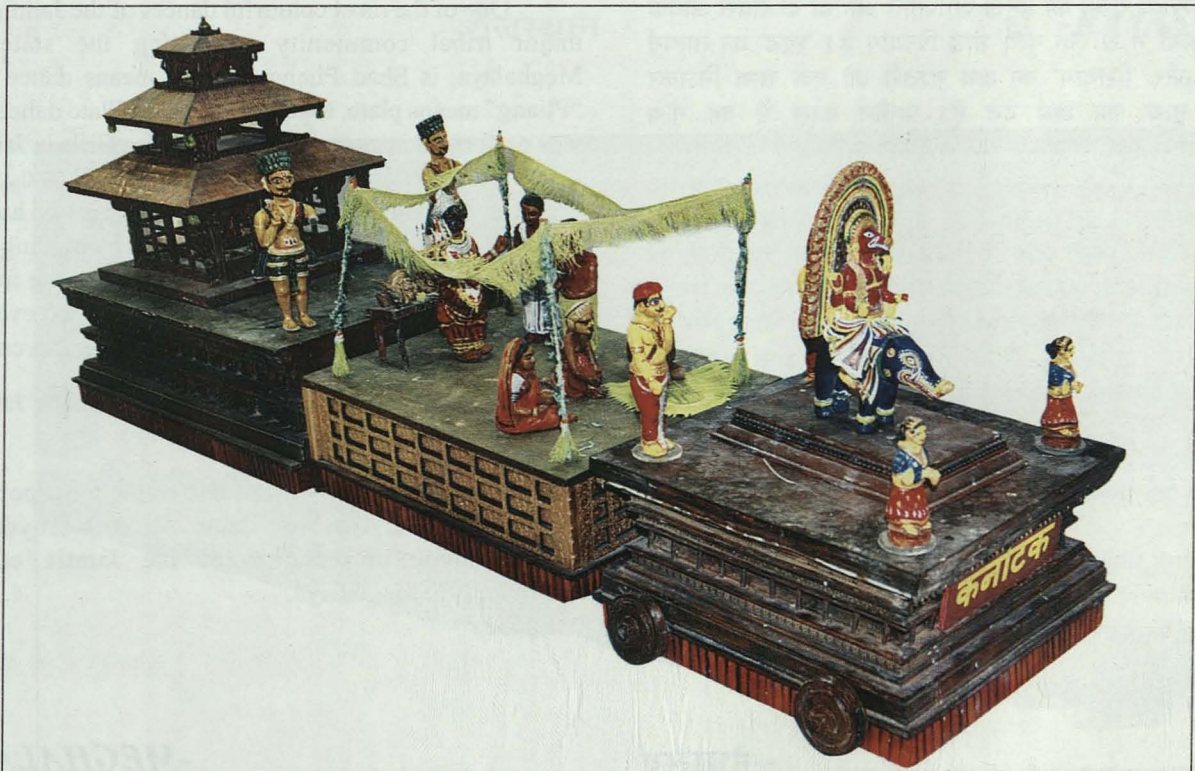
Bhootaradhane

Bhootaradhane is an ancient cultural tradition of Holy Spirit cult worship, which is quite popular in coastal Karnataka. The worship of Bootas is a socio-cultural phenomenon, famous for the artistic beauty of grand and colourful costumes, masks with dazzling make-up accompanied with entertaining music and spell-binding narratives, folk dances, trances and oracles.

The front portion of the tableau depicts Malaraya Bhoota, a demi-god of forests and a benevolent guardian of human beings, who takes care of their crops, cattle and belongings, while at the rear portion are Koti-Chennayya, the legendary twin heroes revered for their valiant fight against injustice and as champions of the downtrodden. The beautifully carved wooden chariots or raths and the sanctum sanctorum or Brahmagudi, the hallowed abode of Bhootas portrayed in the tableau are simply an enchanting sight to behold!

—कर्नाटक

-KARNATAKA





जोई-डे-विवरे— मेघालय का जेंटिया त्यौहार

मेघालय राज्य की प्रमुख जनजाति जेंटिया के सबसे अधिक मोहक नृत्यों में से एक नृत्य शाड प्लियांग है। 'शाड' का तात्पर्य नृत्य है और 'प्लियांग' का अर्थ तश्तरी जो एक साथ मिलकर 'तश्तरी-नृत्य' का अर्थ देते हैं। प्राचीन काल में यह नृत्य राजा-महाराजाओं अथवा उनके राजकीय अतिथियों के मनोरंजन के लिए जेंटिया के राजमहलों में युवा नृत्यांगनाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता था। इसे आमतौर पर दोनों हाथों में तश्तरी लेकर महिलाओं द्वारा किया जाता है। कई बार इसे चार तश्तरियों को लेकर प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें दोनों हाथों में एक-एक तश्तरी पकड़ी जाती है तथा तीसरी तश्तरी होंठ पर तथा चौथी सिर पर रखी होती है। आज कल इसे विवाह समारोहों और अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक अवसरों पर भी प्रदर्शित किया जाता है।

ट्रैक्टर पर नोहसकरियत (स्थानीय खेल) नामक जेंटिया के घूमते हुए एक स्थानीय खेल को दर्शाया गया है।

जीवंत कलाकार सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्यों में से एक, जिसे लाहो के नाम से जाना जाता है, को प्रस्तुत कर रहे हैं। यह मेघालय के जेंटिया जनजाति की लयबद्ध नृत्य प्रस्तुति है।

Joie-de-vivre—Jaintia Festivals of Meghalaya

One of the most colourful dances of the Jaintias, a major tribal community inhabiting the state of Meghalaya, is Shad Pliang. "Shad" means dance and "Pliang" means plate, together it means "Plate dance". It was performed in ancient times by young Girls in Jaintia palaces to entertain Kings or royal guests. It is usually performed by women by holding the plates in two hands. At times, it is performed with four plates by holding two plates in two hands, the third plate in lips and the fourth plate on the head. Now-a-days, it is performed even in marriage ceremonies and in other socio-cultural events.

The Tractor shows a rotating indigenous Jaintia sports known as Nohsakariat (local game).

The live artists perform one of the most popular dance items known as Laho. It is a rhythmic choreographic presentation of the Jaintia ethnic community of Meghalaya.

—मेघालय

-MEGHALAYA

आमेर का किला

राजस्थान की राजधानी जयपुर से 11 किलोमीटर दूर स्थित आमेर का किला एक भव्य एवं शानदार किला है। यह किला मध्यकालीन राजपुताना शान-ओ-शौकत एवं जीवन शैली का अद्भुत उदाहरण है। इसमें अद्वितीय कलात्मकता है जिसमें हिन्दू और मुगल दोनों कलाओं के तत्वों का समावेश है। राजस्थान के डूँडाड़ क्षेत्र की अरावली पर्वत श्रृंखलाओं पर स्थित यह किला पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।

प्रस्तुत झांकी के आमुख पटल पर (ट्रेक्टर वाला भाग) आमेर के किले के प्रवेश द्वार 'गणेश पोल' को दर्शाया गया है जबकि उसके बगल में स्थित 'सूरजपोल' किले के पूर्वी प्रवेश द्वार को प्रदर्शित करता है।

झांकी के पार्श्व भाग में (पिछले भाग में) किले की भव्य स्थापत्य कला को दर्शाया गया है जिनके खूबसूरत जालीदार झरोखों से अरावली पर्वत श्रृंखलाएं दिखाई देती हैं। मुख्य किले का निर्माण विस्मित कर देने वाले सफेद संगमरमर से किया गया है और शीशे की कलात्मक पच्चीकारी इसकी भव्यता में चार चांद लगा रही है। झांकी में शानदार हाथियों को दिखाया गया है जो किले का दर्शन करने आए पर्यटकों और आगंतुकों को लाने-ले जाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

सम्पूर्ण झांकी के आगे-आगे 24 नर्तकियां हैं जो घूमर की धुन पर नृत्य कर रही हैं और इस प्रकार राजस्थान के डूँडाड़ क्षेत्र के प्रसिद्ध लोक नृत्य और राजघरानों के नृत्य को प्रस्तुत कर रही हैं।

—राजस्थान

Amer Fort

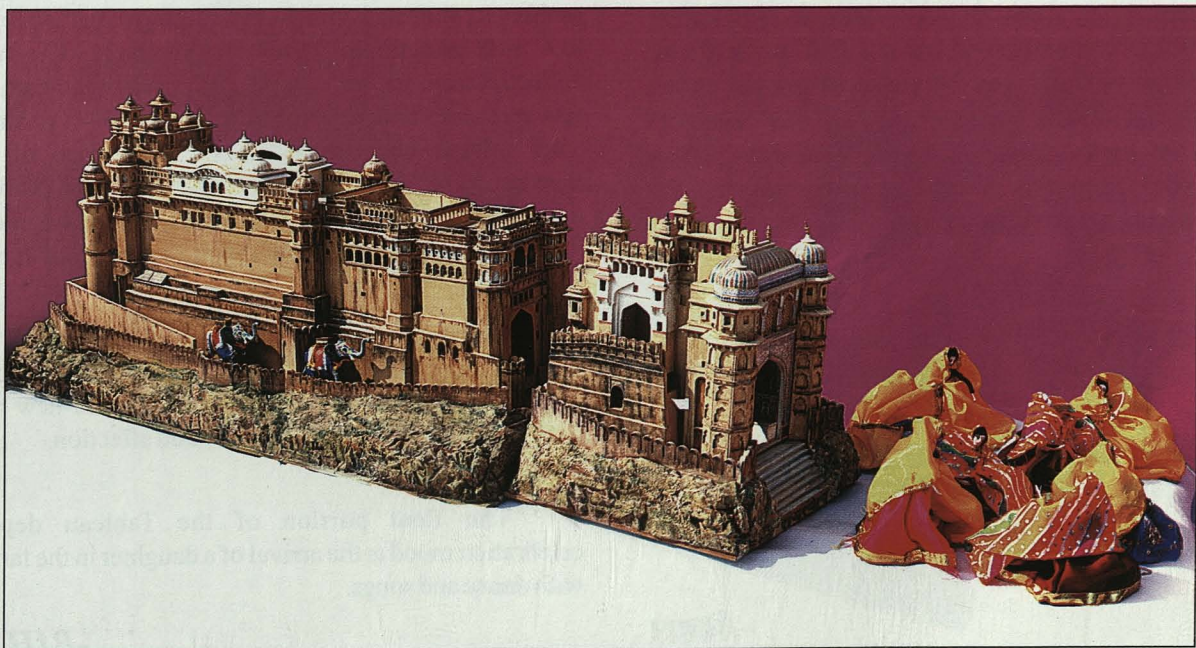
Amer Fort a magnificent fort located in Amer, 11 kilometers from Jaipur (The capital of Rajasthan) and is a typical example of medieval Rajputana life style. It has a unique artistic style which blends both Hindu and Mughal elements. Situated high on the Aravali hills of Dhundhar region of Rajasthan, it is one of the main tourist attractions.

The Rajasthan Tableau's front view (Tractor part) depicts the Amer Fort's entrance gate 'Ganesh Pole' and the adjacent the 'Suraj Pole' depicts the eastern entrance of the fort.

The tableau's rear view (Trailer part) showcases the massive architecture of the fort beautified with netted jharokhas overlooking the Aravali hills. The main fort constructed with stunning white marble-stone and detailing is done with minute mirror work adding to its glory. Also shown are the mighty elephants used to facilitate visitors and tourists to the fort.

The entire teableau is lead by 24 dancers dancing to the tunes of 'Ghumar' representing the Dhundhar region of Rajasthan famous for folk and royal dances.

-RAJASTHAN





धरहरा की वनपुत्रियां

धरहरा नाम का गांव बिहार के भागलपुर जिले में है। जब इस बात की जानकारी मिली कि इस गांव के लोग परिवार में लड़की के पैदा होने पर कम से कम 10 फलदार पेड़ लगाते हैं तो 2010 में यह गांव सुर्खियों में आया। पेड़ लगाने से अन्य तरह की समस्याओं जैसे कि उस बालिका का बड़ा होना, शिक्षा-दीक्षा एवं ब्याह का ध्यान रखना पड़ता है जो लड़की के पालन-पोषण से जुड़ा है। इन फलदार पेड़ों से प्राप्त आमदनी को उस लड़की के नाम से ही जमा किया जाता है जो बाद में उसकी हर तरह की जरूरतों को पूरा करती है। गांव की इस परम्परा में न केवल उस लड़की की परवरिश का ध्यान रखा जाता है बल्कि भ्रूण हत्या, महिला सशक्तिकरण, वातावरण प्रदूषण, पर्यावरण संतुलन और कार्बन-उत्सर्जन की समस्याओं का समाधान भी होता है।

झांकी के अग्रभाग में ट्रैक्टर पर मां की विशालकाय भव्य मूर्ति प्रदर्शित की गई है जो वात्सल्य और आनन्द से ओत-प्रोत होकर अपनी नवजात पुत्री को सीने से लगाए हुए है।

झांकी के गतिमान भाग में नृत्य करते और गीत गाते हुए लोग परिवार में पुत्री के जन्म को हर्षोल्लास के साथ मनाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

—बिहार

Dharhara's Daughters of Forest

In the Bhagalpur district of Bihar there is a village called Dharhara. This village came in limelight in 2010, when it was reported that the families plant a minimum of 10 fruit bearing plants, whenever a girl child is born in their families. Planted trees in turn takes care of other problems connected with the upbringing of that girl child like their growth, education and marriage. The sums collected from fruit plants are deposited in the name of that girl-child which in turn takes cares of everything. This village tradition not only takes care of the upbringing of the girl-child but also tackles the problem of female infanticide, women empowerment, environment pollution, ecological balance and carbon credit too.

The front tractor portion of the Tableau depicts a larger than life statue of a mother holding her new born daughter close to her heart with joy and affection.

The float portion of the Tableau depicts celebration mood at the arrival of a daughter in the family with dance and songs.

-BIHAR

असम का मनमोहक भोरताल—नृत्य

असम का भोरताल—नृत्य समूह के रूप में किया जाता है। आमतौर पर छः से सात नर्तक इस भोरताल नृत्य को प्रस्तुत करते हैं। इस नृत्य को बड़े समूहों में भी प्रस्तुत किया जा सकता है। इसे बहुत तेज धुन पर किया जाता है। इस नृत्य को करते समय नर्तक गण झांझ—मंजीरा से सुसज्जित होते हैं।

झांझ—मंजीरों के साथ इस नृत्य का प्रस्तुतिकरण बहुत मनमोहक प्रतीत होता है। नृत्य की भंगिमाएं इस तरह अभिकल्पित होती हैं ताकि उनसे रंग—बिरंगे पैटर्न उत्पन्न हो सकें। असम के इस नृत्य की यह सबसे बड़ी विशेषता है।

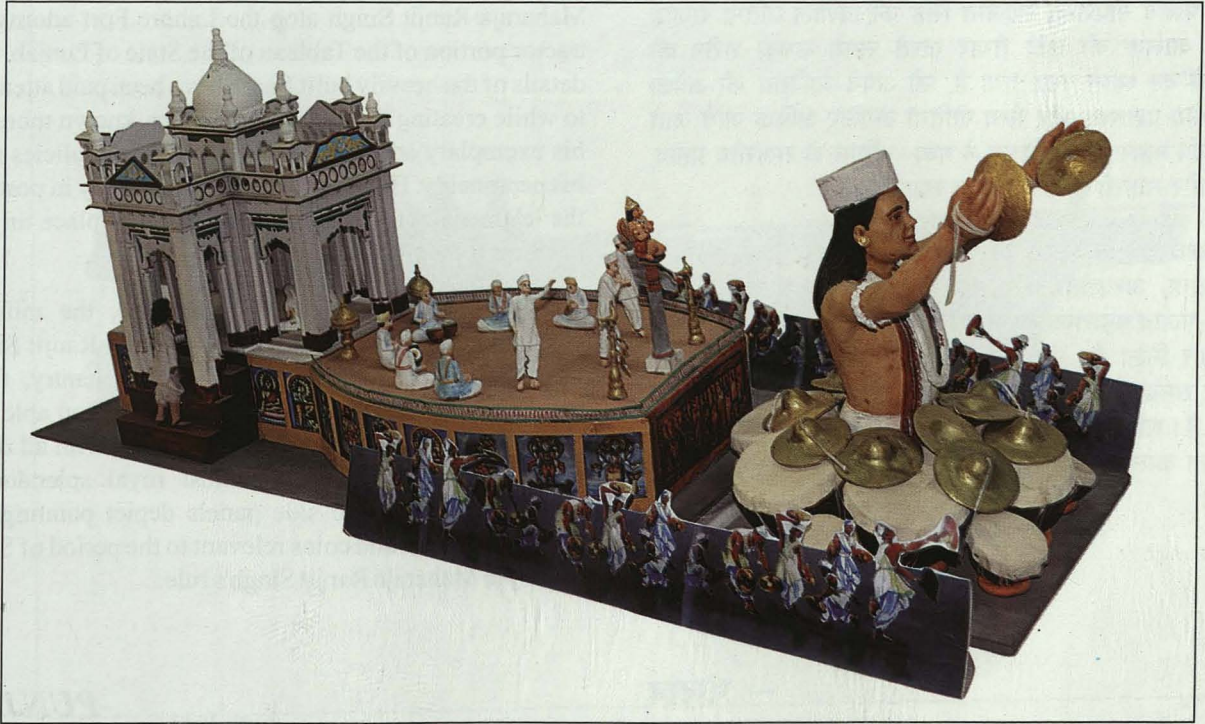
The Enthralling Bhortal Dance of Assam

The Bhortal Nritya of Assam is performed in a group. Six to seven dancers generally present the Bhortal dance of Assam together. This dance can be performed in larger groups as well. It is performed to a very fast beat. The dancers are equipped with cymbals while performing this dance.

The use of the cymbals makes the dance presentation appear very colourful. The dance movements are designed as such that they can produce some very colourful patterns. This is the uniqueness of this dance form of Assam.

—असम

-ASSAM





शेर-ए-पंजाब—महाराजा रणजीत सिंह

झाँकी के ट्रैक्टर वाले भाग में लाहौर के किले के ऊपर शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह की विशाल प्रतिमा सजाई गई है। शासक की छवि तैयार करते समय उनके शरीर की बारीकियों का ध्यान रखा गया है, जो अपने व्यक्तित्व की अपेक्षा अनुकरणीय प्रशासन और सैन्य नीतियों के लिए अधिक जाने जाते थे। तथापि महाराजा के चित्रण में भव्य-भंगिमा के राजसीय प्रभाव, उत्कर्ष और साहसी तत्वों का ध्यान रखा गया है।

कथा की रूपरेखा की निरंतरता में ट्रेलर वाले भाग में पैदल-सेना, अश्वरोही और हाथियों पर सवार सेना के साथ शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह के सैन्य प्रशासन के प्रदर्शन को स्थान मिला है। रंगों के शाही वैभव के बीच ये सभी तत्व मिलकर समग्रतः पंजाब के समर्थ और शूरवीर शासक के चरित्र को उभारते हैं। साइड पैनल पर शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह के शासन काल की ऐतिहासिक घटनाओं और सिक्कों को दर्शाया गया है।

Sher-e-Punjab-Maharaja Ranjit Singh

The larger than life Figure of Sher-e-Punjab Maharaja Ranjit Singh atop the Lahore Fort adorns the tractor portion of the Tableau of the State of Punjab. The details of the heavily built frame have been paid attention to while creating the image of the ruler, known more for his exemplary administrative and military policies than his personality. However, the effect of royalty in posture, the elements of pride and valour, find place in the portrayal of the Maharaja.

In continuation of the story-line, the military administration of Sher-e-Punjab Maharaja Ranjit Singh together with infantry, cavalry and Elephantry, finds display in the trailer portion. The picture of an able and valiant ruler of Punjab emerges in totality with all these elements coming together amidst royal splendor of colour and hues. The side panels depict paintings of historical events and coins relevant to the period of Sher-e-Punjab Maharaja Ranjit Singh's rule.

समुदायीकरण

सशक्तीकरण और नागालैण्ड की जनता के समुदायीकरण के लक्ष्य वाले एक सरकारी कार्यक्रम को 'नवाचार के माध्यम से नीति निर्धारण से सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए' एशिया और प्रशांत क्षेत्र से लोक सेवा हेतु सुप्रसिद्ध राष्ट्र संघ पुरस्कार प्राप्त हुआ। "समुदायीकरण" की इस योजना के अन्तर्गत नागालैण्ड की राज्य सरकार समुदायों के साथ स्कूलों के दायित्व, स्वास्थ्य सुविधाओं, जलापूर्ति, विद्युत आदि के प्रबंधन की हिस्सेदारी करती है जिसका तात्पर्य समुदायों को उनकी शक्तियां प्रदान करना तथा इन संस्थाओं को अपने बल-बूते पर प्रबंधन करने के लिये सबसे निचले स्तर पर रहने वाले वास्तविक लोगों को शक्ति प्रदान करना है। सरकार द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम से नागालैण्ड राज्य में लोक सेवाओं की सुपुर्दगी में पर्याप्त सुधार हुआ है।

"Communitization"

A government programme aimed at empowering people, 'communitization' of Nagaland won the coveted United Nations Award for Public Service from Asia and the Pacific region for 'fostering participation in policy making through innovative mechanism'. Under the scheme of "communitization" Nagaland State Government shares management responsibility for school, health facilities, water supply, electricity etc. with the community, which means delegating powers to the community and empowering the real stake holders at the grass root level to manage these institutions as their own. This government sponsored programme has considerably improved the delivery of public service in the State of Nagaland.

—नागालैण्ड

-NAGALAND





सिक्किम का सकेवा

सकेवा सिक्किम के कीरात खम्बू राज समुदाय द्वारा हर वर्ष मनाया जाने वाला एक त्यौहार है। यह त्यौहार हिंदु धर्म के वैशाख महीने की पूर्णिमा से शुरू होता है, जो अप्रैल और मई महीने के बीच में पड़ता है। यह "भूमि पूजन" अथवा पृथ्वी माता की पूजा करने का एक तरीका है। सकेवा पूजा और सीली (नृत्य) मनुष्य और प्रकृति के बीच घनिष्ठ संबंध के प्रतीक हैं और उनके विशाल अमूल्य अस्तित्व को उजागर करते हैं इसमें पृथ्वी माता का आह्वान करने वाले आम तौर पर दो त्यौहारों का आयोजन किया जाता है जिन्हें उब्योली और उद्योली कहा जाता है। इसमें से पहला त्यौहार बुआई से पहले और दूसरा फसल काटे जाने के बाद मनाया जाता है।

इस समारोह में मंगपास (पुजारी) प्रकृति मां से न केवल अच्छी वर्षा और फसल के लिए प्रार्थना करता है बल्कि सभी मनुष्यों के कल्याण के लिए भी प्रार्थना करता है।

Sakewa of Sikkim

Sakewa is a festival celebrated annually by the Kirat Khambu Rai community of Sikkim. This festival starts on the full moon day of the Hindu month of Baishakh, which falls in between April and May. It is a way of performing "Bhumi Pujan" or worshipping the Mother Earth. The Sakewa Puja and Sili (dance) symbolize the close tie between man and nature and speaks volumes of their prized co-existence. Usually two festivals invoking the mother earth, called Ubyowli and Udyowli are observed. The former is observed before cultivation and sowing of the seeds and the latter is observed before the harvest.

In this ceremony, the Mangpas (priest) not only pray to Mother Nature for good rain and good harvest but also pray for the well being of all human beings.

भारतीय हस्तशिल्प क्षेत्र

भारत का हस्तशिल्प, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है। यह हमारी रचनात्मकता, सौंदर्यबोध और कारीगरी की विरासत संजोए हुए हैं।

लम्बे समय से हमारे हस्तशिल्प ने दुनिया भर को आकर्षित किया है। भारतीय हस्तशिल्प की रेंज, देश की सांस्कृतिक विविधता की तरह ही विविधतायुक्त है। भारतीय हस्तशिल्प का प्रस्तुतिकरण, पारम्परिक से आधुनिक विश्व तक भारतीय हस्तनिर्मित कलाशिल्पों की यात्रा को प्रतिबिम्बित करता है और यह शिल्प, कश्मीर से कन्याकुमारी तक की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें जम्मू एवं कश्मीर की लुगदीनिर्मित कृतियां और कालीन बुनाई, पूर्वोत्तर क्षेत्र की टोकरियां बुनाई, पंजाब की फुलकारी, राजस्थान का मॉडेला, छत्तीसगढ़ का ढोकरा शिल्प, गुजरात की दर्पण और कशीदाकारी, आंध्र प्रदेश की बीदरी इत्यादि सम्मिलित हैं।

Indian Handicrafts Sector

The handicrafts of India represent our rich cultural tradition. They embody our heritage of creativity, aesthetics and craftsmanship.

Through the ages, our handicrafts have fascinated the world. The range of Indian handicrafts is as diverse as the country's cultural diversity. The tableau on Indian handicrafts reflects the journey of Indian handmade crafts from the traditional to the modern world representing rich cultural heritage from Kashmir to Kanyakumari that is papier mache & carpet weaving from Jammu & Kashmir, basket weaving from North East Region, phulkari from Punjab, Molela work from Rajasthan, Dhokra Crafts from Chattisgarh, Mirror work of Gujarat, Bidri from Andhra Pradesh etc.

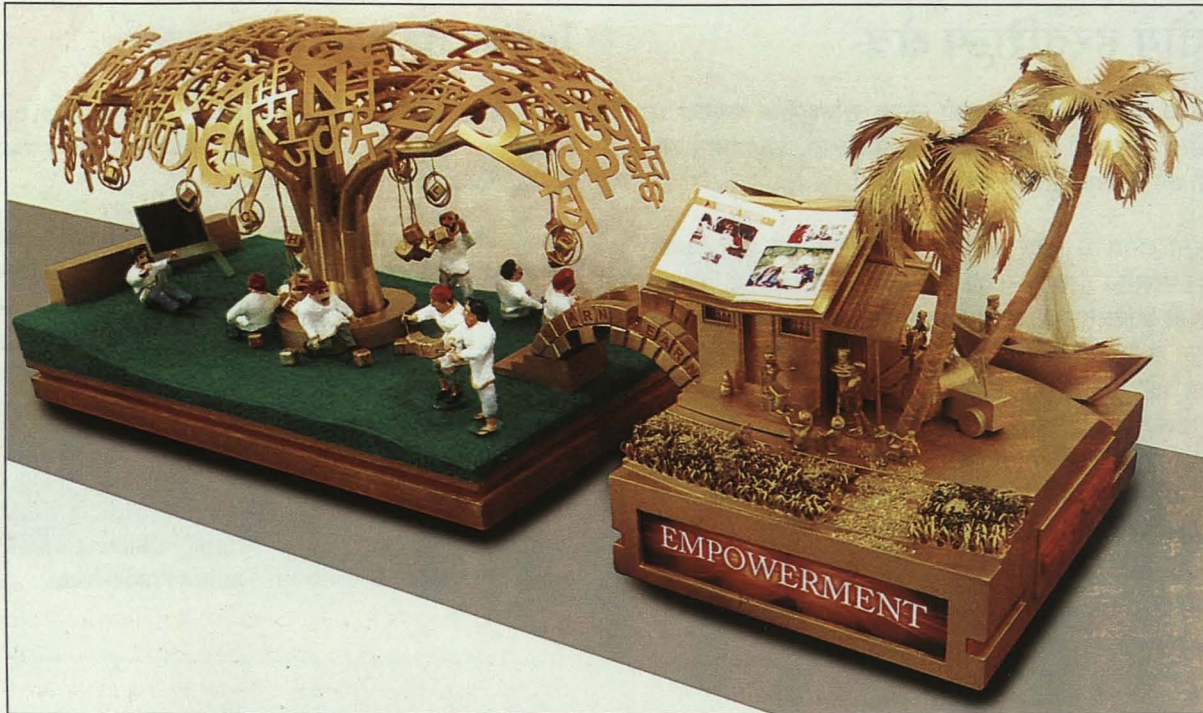
—वस्त्र मंत्रालय

(राष्ट्रीय डिजाइन एवं उत्पाद विकास केन्द्र)

- **MINISTRY OF TEXTILES**

(NATIONAL CENTRE FOR DESIGN AND PRODUCT DEVELOPMENT)





साक्षर भारत

सृजनात्मक विचार: “ज्ञान के फल की प्राप्ति के माध्यम से सुनहरे भविष्य का निर्माण”

इस अभिकल्प में दो तरह की दुनिया को दर्शाया गया है। एक दुनिया (जो ट्रेलर पर है) शिक्षा के माध्यम से बदलाव की प्रक्रिया को दर्शाती है वहीं दूसरी दुनिया (जो ट्रैक्टर पर दिखाई गई है) महत्वाकांक्षा के लक्ष्य—अर्थात् एक ऐसा समाज जो पूरी तरह साक्षर है को दर्शाती है।

“ज्ञान के सुनहरे वृक्ष” का सृजनात्मक विचार पुरातन भारतीय रूपक जीवन वृक्ष के अनुकल्प से अनुप्रेरित है जो ट्रेलर पर बीचों-बीच में जगह लिए हुए है (इस प्रकार जीवन में शिक्षा के केन्द्रीय महत्व को उजागर करता है)।

समानता, समृद्धि, शांति एवं अधिकारिता (विशेष रूप से महिलाओं) की आकांक्षा वाले आदर्श संसार का वर्णन एक सुनहरे संसार के रूप में किया गया है। सुनहरे रंग के सांकेतिक अनुप्रयोग के अलावा एक और चीज जो बदलती हुई दुनिया को ज्ञान के माध्यम से उस आदर्शमय संसार से जोड़ती है, एक सेतु है। इस उदाहरण में सेतु ज्ञान वृक्ष से प्राप्त फलों से निर्मित है। इस दृष्टि से यह बेहतर कल को जोड़ने वाला सेतु है।

ज्ञांकी के साथ नृत्य-कला (कोरियोग्राफी) शिक्षा के साथ भावनाओं के प्रवाह को दर्शाती है जो कौतुहल और कुछ दूढ़ पाने की भावना से ज्ञान और बोध के आनन्दमय उल्लास की ओर बह रहा है।

**मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग)**

SAAKSHAR BHARAT

CREATIVE IDEA: “Reaping the fruits of knowledge and building a bridge to a golden future”

The design depicts two worlds. One world (on the trailer) depicts the process of transformation through education. The other world (on the tractor) depicts the aspirational goal – a society that is fully literate.

The creative idea of the “Golden tree of knowledge”, a motif inspired by the classic Indian metaphor, the tree of life, takes a central position on the trailer (thus denoting the centrality of education in life).

The ideal world, aspired for – one of equity, prosperity, peace and empowerment (especially of women) is depicted as a Golden world. Apart from the symbolic use of the colour gold, what links the world of transformation through knowledge to the ideal world is a bridge. In this case, a bridge is built of fruits from the tree of knowledge. It is, in a sense, the bridge to a brighter tomorrow.

The choreography depicts the flow of emotions associated with learning – from curiosity and a sense of discovery to joyous celebration of knowledge and understanding.

**-MIN OF HRD(DEPTT. OF SCHOOL
EDUCATION & LITERACY)**

जनजाति सशक्तिकरण

गणतंत्र दिवस परेड 2012 में जनजातीय मामले के मंत्रालय द्वारा आजीविका उपायों और शिक्षा के लिए निर्मित विभिन्न साधनों के माध्यम से जनजातीय आबादी के सशक्तिकरण की झांकी को प्रस्तुत किया गया है। वन अधिकारों को मान्यता देना इसी अर्थ में अनुपूरक प्रेरणात्मक सोच है।

टैक्टर भाग में डोकरा उत्पाद के साथ काम करती जनजातीय महिला का सजीव चित्रण किया गया है जो छत्तीसगढ़ से है और इस प्रकार की कला बस्तर क्षेत्र में लोकप्रिय है।

भूमि-तत्व के रूप में प्रस्तुत जनजातीय नृत्य में शामिल हैं बस्तर क्षेत्र का संगीत और कर्मा नृत्य शैली के हाव-भाव तथा प्रयुक्त अनूठे वाद्य-यंत्र जो इस क्षेत्र की जनजातीय आबादी से विशिष्टतः जुड़े हैं। मांद्री नामक लंबा ढोल जनजातीय लोगों का संगीत वाद्य यंत्र है और अधिकांश समारोहों में विशेष रूप से बजाया जाता है।

टेलर भाग वर्तमान में जनजातीय आबादी को मुख्यधारा के अंश के रूप में पर्याप्त आजीविका साधनों सहित उजागर करता है और प्रगतिशील कार्य स्व-रोजगार तथा राजस्व उत्पत्ति के असंख्य उपायों सहित सशक्तिकरण को प्रकट करता है। पिछले हिस्से में वन उत्पाद का छोटा उपहार है जो जनजातीय लोगों के लिए राजस्व का महत्वपूर्ण स्रोत है तथा सरकार द्वारा उन्हें प्रदत्त वन अधिकारों के अनुरूप है।

Tribal Empowerment

The Tableau for the Republic Day Parade- 2012 from the Ministry of Tribal Affairs seeks to portray the empowerment of Tribal population through various means created for livelihood avenues and education. Recognition of Forest Rights forms a supplementary message to the same effect.

The Tractor portion depicts a larger than life image of a tribal woman working with a Dokra product from Chattisgarh and this art is popular in the Bastar region.

The Tribal dance which forms the ground element comprises of music and expressions of karma dance form, from the Bastar region and the instruments like elongated drum called the Mandri figures prominently in most celebrations.

The Trailer portion highlights the Tribal populace with adequate means of livelihood to signify empowerment, by way of self-employment and revenue generation. At the rear end is the bounty of minor forest produce, an important source of revenue resulting out of Forest rights conferred by the Government.

—जनजातीय कार्य मंत्रालय

—MINISTRY OF TRIBAL AFFAIRS





हिम घाटी

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग हिम घाटी का चित्रण करती हुई लकड़ी के ढांचे और काईदार घास पर पूरी तरह से भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग बिरंगे पुष्पों से सजाई गयी पुष्पक झांकी का निर्माण किया गया है। अपने प्राकृतिक रंगों से भरपूर सभी ताजे फूल हिम और घाटी की अन्य विशिष्टताओं के रूप में झांकी में दिखाए गए हैं। इस मनोहर झांकी में रंगबिरंगे सुन्दर फूल हैं जहां पर छोटे बच्चे खेलते हुए आनन्दित हो रहे हैं। फूलों की ताजगी को कायम रखने के लिए सुन्दर पुष्पों से लदी इस झांकी का महत्वपूर्ण और सूक्ष्म कार्य एक ही दिन में 25 जनवरी को सम्पूर्ण किया गया। नमी बनाए रखने के लिए फूलों के नीचे काईदार घास का प्रयोग किया गया है। प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक फूलों के प्रयोग से निर्मित सुन्दर झांकी अत्याधिक नयनाभिराम अनुभूति प्रदान करने वाली है।

Snow Valley

This year CPWD floral tableau is depicting Snow Valley made of fresh flowers as it blooms with different colorful flowers in the northern part of India. The tableau shows the scenic glaciers and biting cold conditions where people are living and tourists are enjoying the beauty of nature. To keep alive this enjoyment in future, protection of glaciers from melting due to global warming is the need of the hour. The Tableau is crafted with natural flora and fauna aesthetically with live Artists also.

—केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (बागवानी)

—CPWD (HORTICULTURE)

राष्ट्रीय मतदाता दिवस

25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाने का उद्देश्य मतदाताओं के नामांकन को अधिकाधिक बढ़ाना तथा उसके द्वारा भारतीय लोकतंत्र की गुणवत्ता को विकसित करना है।

झाँकी के सामने का भाग देश के युवाओं को प्रत्येक निर्वाचन में निर्भीक होकर तथा धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना मतदान करने की शपथ लेते हुए दर्शाता है।

इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन को झाँकी के दोनों ओर निर्वाचक फोटो पहचान पत्रों की प्रतिकृति द्वारा सजाया गया है, जो दोनों ही राजनैतिक सशक्तिकरण के प्रतीक हैं।

एक मतदान केन्द्र, अधिकारियों द्वारा निर्वाचकों को उनके मताधिकार का प्रयोग करने में सहायता करते हुए दर्शाता है।

संसद भवन की प्रतिकृति, भारत के निर्वाचक प्रजातंत्र की जीवंत पुनराभिव्यक्ति है जो पूरे विश्व के लिए एक उज्ज्वल उदाहरण बन गया है।

—भारत निर्वाचन आयोग

National Voters' Day

The National Voters' Day on 25th January carries the objective to maximize enrolment of voters and thereby enhance the quality of Indian democracy.

The front part of the Tableau depicts the country's youth pledging to vote in every election fearlessly and without considerations of religion, race, caste, community, language or any other inducement.

The Electronic Voting Machine (EVM) is complemented by a replica of an Elector Photo Identity Card on the sides of the tableau, both signifying political empowerment.

A Polling Station shows officials assisting the electors in exercise of their franchise.

A replica of the Parliament House is a live reaffirmation of India's electoral democracy that has become a shining example for the world.

-ELECTION COMMISSION OF INDIA





भारतीय सीमा शुल्क विभाग—हमारी आर्थिक सीमा सक्रिय प्रहरी

भारतीय सीमा शुल्क विभाग हमारी आर्थिक सीमाओं का संरक्षक है। केन्द्र सरकार के राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान करने के साथ-साथ यह अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों और उनके सामान की आवाजाही को आसान बनाता है। नकली भारतीय नोट की तस्करी रोक कर हमारी अर्थव्यवस्था के साथ-साथ पर्यावरण, वन्यजीवन और विरासत की भी रक्षा करता है। इतना ही नहीं यह विलुप्त होते पेड़-पौधों, वनस्पति, कला के नमूनों, पुरावशेषों नशीली दवाओं आदि की तस्करी को भी रोकता है। यह झांकी अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा, बंदरगाहों और अटारी व मुन्नाबाओ समेत लैंड कस्टम्स स्टेशनों पर भारतीय सीमा शुल्क विभाग के काम-काज के भिन्न पहलुओं का दृश्य पेश करती है। 26 जनवरी को सीमा शुल्क दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। बजाया जा रहा संगीत भारतीय सीमा शुल्क विभाग की सिगनेचर धुन है "प्रगति की धड़कन"।

"Indian Customs—A Pro-active Force To Guard Our Economic Frontiers"

Indian Customs is the Guardian of our Economic Frontiers. Besides being a significant contributor to Central Government revenues & facilitating the movement of international passengers & goods, Indian Customs protects our economy, environment, wildlife and heritage by checking smuggling including that of fake Indian Currency Notes (FICN), endangered species of fauna, arts & antiquities, narcotics, drugs etc. The tableau depicts the basic features of the working of Indian Customs at International Airports, Sea ports and Land Customs Stations like Attari and Munnabao. 26th January is also celebrated as Customs Day. The music being played is the signature tune of Indian Customs – "Pragati ki Dhadkan".

—वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग—सीबीईसी)

**MIN OF FINANCE (DEPTT. OF
REVENUE -CBEC)**

कृषि में विविधता

भारत में कृषि जीविका लम्बे समय से एक अंशकालिक उद्यम के रूप में रही है जो अब एक पूर्ण विकसित व्यवसायिकत उद्यम के रूप में विकसित हो रहा है। यह किसानों को सम्पन्नता प्रदान करते के साथ-साथ राष्ट्र की खाद्य एवं पोषाहार सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कृषि की झांकी, कृषि में विविधीकरण की उभरती प्रवृत्ति को दर्शाती है।

सामने दिख रहा बहुरंगी अक्वेरियम भूमि और गहरे समुद्र में मत्स्य पालन को दर्शाता है। तेल की एक बूंद को व्यक्ति द्वारा हाथ में प्रतीकात्मक रूप से पकड़ना तेल के आयात पर हमारी निर्भरता कम करने के सरकार के महत्वपूर्ण प्रयास को दर्शा रहा है। मनोहर फूलों के खेतों के बीच मधुमक्खी पालन तथा उसके बाद रेशम उद्योग को दर्शाता हुआ शहतूत का पेड़ है। खिला हुआ कपास का खेत दर्शकों को पिछले कुछ वर्षों में कई गुना बढ़े कपास उत्पादन की याद दिलाता है। सब्जियों एवं फलों से लदा खूबसूरत शिकारा बागवानी क्षेत्र की महत्ता को दर्शाता है। भारतीय कृषि के विभिन्न पहलुओं की मनोहर यात्रा से गुजरते हुए आयुर्वेद के पारंपरिक ज्ञान का पड़ाव आता है जहां पत्थर से बना खरल और मूसल सुगंधित और औषधीय पौधों की खेती एवं प्रसंस्करण को दर्शाता है।

Diversification In Agriculture

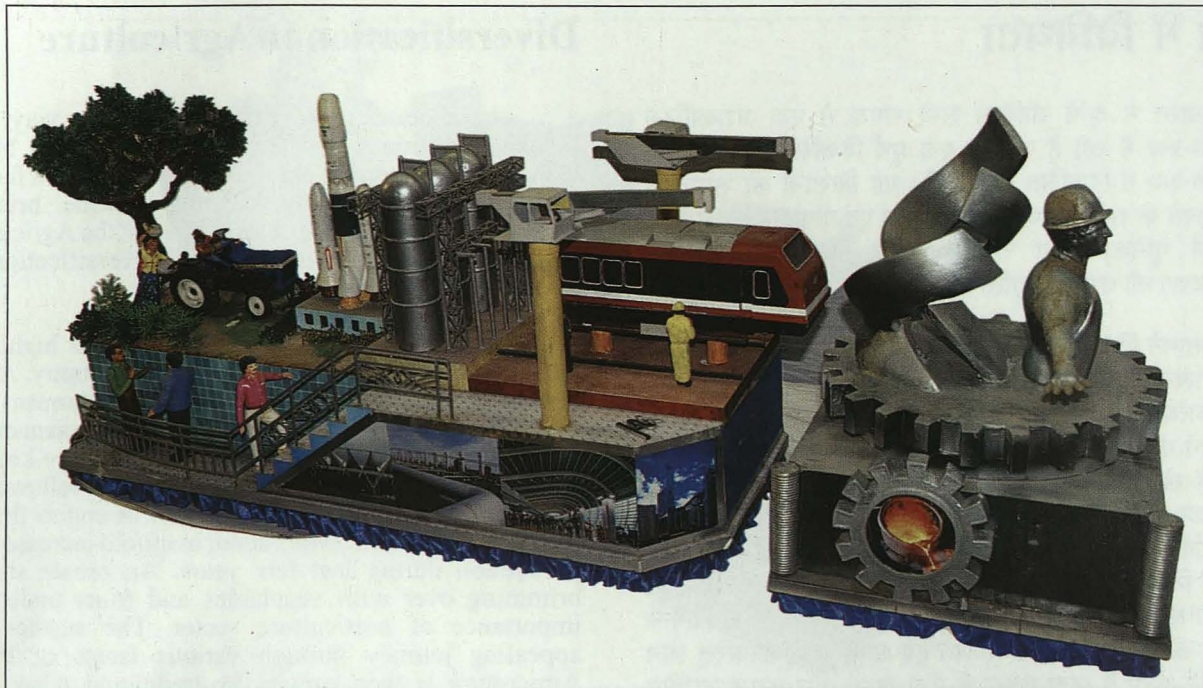
Agriculture in India has come a long way from being a vocation for sustenance to often a full blown commercial venture. It plays an important role in food & nutritional security for the nation while bringing prosperity to the farmers. The tableau of the Agriculture depicts the emerging trend of diversification in agriculture.

The colourful aquarium in the front highlights inland and deep sea aqua-culture in the country. An oil drop being metaphorically captured by a human hand focusses on thrust being given by the Government on oil-palm to reduce our dependence on imports. Bee-keeping in the midst of picturesque flower fields is followed by Mulberry Tree (showing Sericulture). A cotton field in bloom reminds the viewers about manifold increase in its production during last few years. An ornate shikara brimming over with vegetables and fruits underlines importance of horticulture sector. The aesthetically appealing journey through various facets of Indian Agriculture is then capped by traditional wisdom of Ayurveda wherein a hand-stone crusher and bowl epitomise cultivation and processing of aromatic and medicinal plants.

—कृषि मंत्रालय

-MIN OF AGRICULTURE





राष्ट्र को सुदृढ़ करता इस्पात

इस्पात मंत्रालय की इस झांकी में इस्पात को प्रत्येक क्षेत्र में सर्वत्र व्याप्त घटक के रूप में दर्शाया गया है। शक्ति की संकल्पना को आदमकद आकार से बड़े आकार के शक्तिशाली पुरुष की सजग मुद्रा में दिखाकर चित्रित किया गया है।

इस झांकी में यांत्रिक अवधारणाएं दर्शायी गई हैं जिनमें विभिन्न उद्योगों में निर्माण और भवन-निर्माण के विभिन्न चरणों का चित्रण किया गया है। क्रेन, क्रेन पर लटका हुआ रेल का डिब्बा आदि किसी उद्योग के प्रारंभिक चरण में इस्पात के उपयोग का संदेश देता है। एक और रेलवे में पटरियां, इंजन और रॉकेट आदि इस्पात के नानाविध उपयोग का संदेश दे रहे हैं तो दूसरी ओर ट्रैक्टरों और बाईसकलों के माध्यम से ग्रामिण क्षेत्र और कृषि क्षेत्र में इस्पात की उपयोगिता प्रदर्शित की गई है।

एक ही प्लेटफार्म पर विभिन्न घटकों की सौन्दर्यात्मक बनावट और बनावट में विभिन्न घटकों का प्रस्तुतीकरण इस्पात मंत्रालय की इस झांकी की मुख्य विशेषता है।

Steel Strengthens The Nation

The Tableau for the Ministry of Steel presents steel as an all-pervasive component in every sector. The concept of strength is conveyed through a larger than life figure of a strongly built male, in a take-off pose.

The presentation shows mechanical concepts, wherein construction and building stages in various industries is depicted. The crane, the railway coach suspended on a hoist etc add to the message of steel as being employed during the assembly stage of any industry. The diversity in utility of steel on one hand is depicted through its usage in Railways, Steel tracks, engines, rockets etc. On the other hand, its usage in Agriculture and rural sector is depicted through tractor and bicycles.

The aesthetic composition of diverse elements, coming together on a single Platform and the presentation of disparate elements are the strength of the Tableau of the Ministry of Steel.

—इस्पात मंत्रालय

-MINISTRY OF STEEL

राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना

हाथ पकड़ लो साथ चलें, हम राह चलें दिन रात चलें।

भागीदारी की भावना को मूर्तरूप देने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की झांकी सम्पूर्ण भारत में सभी घरों में सार्वजनिक सेवाओं की मौन क्रांति की द्योतक है। वह क्रांति जिसके तहत सरकार निजी क्षेत्र, गैर-सरकारी संगठनों और यहां तक कि ग्राम स्तरीय उद्यमियों के साथ मिलकर हमें सार्वजनिक सेवाएं प्रदान कर रही हैं। इसे सुन्दर तरीके से झांकी में प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस गीत को गुलजार ने लेखबद्ध किया है और उस्ताद इकबाल खान अहमद ने संगीतबद्ध किया है और ये इंटरनेट, मोबाइल फोन तथा 6 लाख गांवों में एक लाख से अधिक सार्वजनिक सेवा केंद्रों के जरिए भारत के अधिकांश ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में आम आदमी के द्वार तक सार्वजनिक सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय ई-शासन योजना (सीएससी) के विजन को चरितार्थ करता है। भारतीय जन-मानस के लाभ के लिए राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना (एनईजीपी) द्वारा भारत की सूचना प्रौद्योगिकी क्षमता का प्रदर्शन इस झांकी के माध्यम से किया गया है।

—संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
(सूचना प्रौद्योगिकी विभाग)

National E-Governance Plan

Haath Pakar Lo Saath Chalein, Hum Raah Chalein Din Raat Chalein

Embodying the spirit of partnership, the Department of Information Technology's Tableau represents the silent revolution of Public Services closer home sweeping across India enabled in partnership with private sector, NGOs and even village Level Entrepreneurs. This is being conveyed on the Tableau beautifully through mime.

The lyrics have been penned by Gulzar and composed by Ustad Iqbal Ahmed Khan and represent the vision of the National e-Governance Plan (NeGP) to make Public Services available at the doorstep of the common man in the most rural and remotest corner of India over internet, mobile phones and through 1 lakh+ Common Services Centres (CSCs) in 6 lakh villages. The Tableau showcases the leveraging India's IT prowess by NeGP for the benefit of Indian masses.

**-MINISTRY OF COMMUNICATION
& I.T. (DEPTT. OF INFORMATION
TECHNOLOGY)**





पंजाब मेल – तब और अब

पंजाब मेल भारतीय रेलवे की प्रथम गाड़ी है जो अपने 100वें वर्ष में पदार्पण कर रही है। इसे 1912 में शुरू किया गया था। उस समय पंजाब मेल का मार्ग मुख्यतः 'द ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे' होता था। यह इटारसी, आगरा, दिल्ली, अमृतसर और लाहौर से होते हुए पेशावर कैंट पहुँचती थी।

वो दौर गया जब पंजाब मेल भाप इंजन से चलाई जाती थी, अब इसे डीजल और बिजली के रेल इंजनों से चलाया जाता है। पंजाब मेल फिरोज़पुर कैंट से चलकर मुंबई के छत्रपति शिवाजी टर्मिनस पर अपनी यात्रा को विराम देती है। अपनी यात्रा के दौरान यह रेलगाड़ी छः राज्यों से गुजरते हुए अपने साथ विभिन्न प्रांतों की महक समेटते हुए "देश का मेल भारतीय रेल" का संदेश जन-जन तक पहुँचाती है।

Punjab Mail- Then & Now

Punjab Mail is the first train to achieve the distinction of entering its 100th year on Indian Railways. It was started in 1912. The Punjab Mail's route ran mainly over 'The Great Indian Peninsula Railway'; and passed through Itarsi, Agra, Delhi, Amritsar and Lahore before terminating at Peshawar Cantonment.

The Punjab Mail has come a long way from the days, when it was hauled by steam engines. Today, diesel and electric engines power the train during its journey which starts from Firozpur Cantt and ends at Mumbai's Chhatrapati Shivaji Terminus (CST). While passing through six states during its journey it carries the flavours of the regions it traverses, thus; - "Bridging India.. Connecting people".

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार 2011 के विजेता

Winners of the National Award for Bravery – 2011

नाम	राज्य	Name	State
स्व. मास्टर कपिल सिंह नेगी@	उत्तराखण्ड	Late Master Kapil Singh Negi@	Uttarakhand
कुमारी मित्तल महेन्द्रभाई पाटडिया*	गुजरात	Km. Mittal Mahendrabhai Patadiya*	Gujarat
मास्टर ओम प्रकाश यादव**	उत्तर प्रदेश	Master Om Prakash Yadav**	Uttar Pradesh
स्व. मास्टर आदित्य गोपाल***	अरुणाचल प्रदेश	Late Master Adithya Gopal***	Arunachal Pradesh
मास्टर उमा शंकर***	दिल्ली	Master Uma Shankar***	Delhi
कुमारी अंजली सिंह गौतम***	छत्तीसगढ़	Km. Anjali Singh Gautam***	Chhattisgarh
स्व. कुमारी सौधिता बर्मन	पश्चिम बंगाल	Late Km. Saudhita Barman	West Bengal
मास्टर जी. परमेश्वरन	तमिलनाडू	Master G. Parameswaran	Tamil Nadu
मास्टर जॉनसन तौरांगबम	मणिपुर	Master Johnson Tourangbam	Manipur
मास्टर सन्देश पी.हेगड़े	कर्नाटक	Master Sandesh P. Hegde	Karnataka
मास्टर यांडम अमरा उदय किरण	आन्ध्र प्रदेश	Master Yandam Amara Uday Kiran	Andhra Pradesh
स्व. कुमारी लवली वर्मा	उत्तर प्रदेश	Late Km. Lovely Verma	Uttar Pradesh
मास्टर क्षेत्रीमयुम राकेश सिंह	मणिपुर	Master Kshetrimayum Rakesh Singh	Manipur
मास्टर मोहम्मद निषाद वी. पी.	केरल	Master Mohammed Nishadh V.P.	Kerala
मास्टर अंशिफ सी. के.	केरल	Master Anshif C.K.	Kerala
मास्टर सूत्रपु शिवा प्रसाद	आन्ध्र प्रदेश	Master Suthrapu Shiva Prasad	Andhra Pradesh
मास्टर रंजन प्रधान	छत्तीसगढ़	Master Ranjan Pradhan	Chhattisgarh
स्व. मास्टर सी. लालदुआमा	मिजोरम	Late Master C. Lalduhawma	Mizoram
मास्टर सहशाद के.	केरल	Master Sahsad K.	Kerala
कुमारी दिव्याबेन मानसंगभाई चौहान	गुजरात	Km. Divyaben Mansangbhai Chauhan	Gujarat
मास्टर डूंगर सिंह	राजस्थान	Master Dungar Singh	Rajasthan
कुमारी शीतल साध्वी सलूजा	छत्तीसगढ़	Km. Sheetal Sadvi Saluja	Chhattisgarh
कुमारी प्रसन्नता शाण्डिल्य	उड़ीसा	Km. Prasannta Shandilya	Odisha
कुमारी सिन्धुश्री बी. ए.	कर्नाटक	Km. Sindhushree B.A.	Karnataka

- @ भारत अवार्ड
 * गीता चोपड़ा पुरस्कार
 ** संजय चोपड़ा पुरस्कार
 *** बापू गायधानी पुरस्कार

- @ Bharat Award
 * Geeta Chopra Award
 ** Sanjay Chopra Award
 *** Bapu Gaidhani Award

बच्चों की प्रस्तुति

साक्षरता और शिक्षा

1. केन्द्रीय विद्यालय, सैक्टर-2, आर.के.पुरम, दिल्ली के 160 छात्र/छात्राएं साक्षरता मिशन और संसद भवन का चित्र बनाते हुए ऐसे विश्व की कामना कर रहे हैं जहां मानव मन से, वाणी से, कर्म से शिक्षित हो, जहां संस्कारों की महक हो, जहां नैतिकता का वास हो, जहां संयम, अनुशासन और विवेक से नियंत्रित मन हो ताकि अच्छाई के आवरण से धरा गगन आच्छादित हो जाए।
2. गणतंत्र दिवस के इस पावन राष्ट्रीय मंच पर महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद स्वामी विवेकानंद और रविंद्र नाथ टैगोर जी की 150वीं जयंती मनाने के बाद आज की युवा पीढ़ी प्रण करती है कि शिक्षा प्रसार का ये दीपक जो सर्वशिक्षा अभियान के माध्यम से जलाया जा रहा है, सदा-सदा के लिए ज्योतिर्गोला रहेगा और "सब पढ़ें, सब बढ़ें" का नारा साकार होगा। तब हर जन गण मन उन्नत होगा, सुसंस्कृत होगा और सभी गर्व से कह उठेंगे, हिन्दुस्तान जिन्दाबाद।

—केन्द्रीय विद्यालय, आर.के.पुरम, दिल्ली

तंजावुर

दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र तमिलनाडु की करगम कला का प्रदर्शन कर रहा है जिसमें तमिलनाडु के तंजावुर जिले के 15 विद्यालयों के 160 स्कूली छात्र भाग ले रहे हैं।

इस नृत्य की कोरियोग्राफी (नृत्य-निर्देशन) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार विजेता और कलैमामनि थीरु. टी. सोमसुंदरम द्वारा की गई है।

करगम तमिलनाडु का एक लोकनृत्य है जिसका उद्भव स्वास्थ्य और वर्षा की अधिष्ठात्री देवी मरियम्मन को समर्पित एक अनुष्ठान के रूप में हुआ था। वे भयंकर चेचक और हैजा की महामारियों से भी रक्षा करती है। इस अनुष्ठान को अगस्त महीने में निष्पादित किया जाता है। मरियम्मन की मूर्ति भी जुलूस के साथ ले जाई जाती है।

करगम नृत्य तमिलनाडु, पांडिचेरी, आंध्र प्रदेश (गडगलू) और कर्नाटक (करागा) में काफी लोकप्रिय है। कलाकारों द्वारा रंग-बिरंगी वेशभूषा में अपने सिर पर सजे हुए और उर्ध्व रूप से एक पर एक रखे भांड लेकर नादस्वरम की लय और थाविल ताल पर जीवंत रूप में नृत्य करना सहज ही आंखों को आकर्षित करता है। मंदिर महोत्सवों के अवसर पर यह गांवों में लोकप्रिय है।

—दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, तंजावुर

Children's Pageant

LITERACY AND EDUCATION

1. By making the formations regarding mass literacy and Parliament, 160 students of Kendriya Vidyalaya, Sec-2, R.K. Puram, New Delhi had wished for such a world where every person is educated in letter and spirit, where there is fragrance of values, morality, patience, discipline and where the head controls the heart so that the Mother Earth and sky are brimming with goodness.

2. On the occasion of this Republic Day, the youth of today resolve to keep the lamp of education lit through this mass education mission. They pray that everyone gets literate, marches forward on the path of progress. Everyone would then touch the heights of prosperity, after getting educated, enlightened and empowered.

Kendriya Vidyalaya, R.K. Puram, New Delhi

Thanjavur

The South Zone Cultural Centre presents Karagam Art Form from Tamil Nadu with 160 School children consisting of 15 schools from Thanjavur District of Tamil Nadu.

This dance has been choreographed by Sangeeth Natak Academy Awardee & Kalaimamani Thiru. T. Somasundaram.

Karagam is a folk dance of Tamil Nadu which originated as a ritual dedicated to Mariamman, the Goddess of health and rain. She is also the protector from the dreaded small pox and cholera. This ritual is performed in the month of August. The idol of Mariamman is carried in procession.

The Karagam dance is very popular in Tamil Nadu, Pondicherry, Andhra Pradesh (Garagalu) and Karnataka (Karaga). It is an eye catching item with the performer carrying decorated and vertically piled vessels on their heads and donning colourful costumes dancing in a lively manner to the tune of Nadaswaram and the rhythm of Thavil. It is popular in villages during temple festivals.

South Zone Cultural Centre, Thanjavur

ठकुरानी (देवी) यात्रा

ओडिशा के गंजम जिले के लोक नृत्यों में जनजातीय संस्कृति और सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है। संभवतः इस दृष्टि से पशु नृत्य और जोड़ी शंख बहुत ही लोकप्रिय लोकनृत्य हैं और गंजम जिले की ठकुरानी यात्रा के धार्मिक जुलूस से इनका संबंध है।

जोड़ी शंख ग्रामीण संगीत की अनूठी प्रस्तुति है जिसमें वाद्य और नृत्य संयुक्त रूप में आबद्ध हैं। शंख बजाते समय कलाकार आश्चर्यजनक रूप से, शंखनाद और शरीर की गति के बीच लयबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। यह कला भौतिक एवं देह से जुड़ी है, इसकी अंतरात्मा देहाती और वेशभूषा रंग-बिरंगी है। इसके साथ के अन्य वाद्य यंत्र ढोल, चांगू और महूरी हैं। ठकुरानी यात्रा में मुख्य भूमिका के रूप में जोड़ी शंख पवित्रता एवं सादगी का द्योतक है।

पशुओं के मुखौटों वाले मनोरंजक नृत्य गंजम जिले में, विशेष रूप से भंजनगर में लोकप्रिय हैं। पशुओं के मुखौटों वाले ये नृत्य चीता, सांड, घोड़े आदि के हैं। सभी मुखौटे बड़े आकार वाले, रंग-बिरंगे और सजे-धजे हैं। इस नृत्य के माध्यम से लोग ग्राम देवी ठकुरानी जिन्हें “बागदेवी” कहा जाता है, की पूजा करते हैं। यह नृत्य परम्परागत ढोल वादकों द्वारा थाप-ताल की गति पर किया जाता है। आम तौर पर मुखौटा नर्तक विशेष रूप से दशहरा और “ठकुरानी यात्रा” के अवसर पर धार्मिक जुलूसों के आगे-आगे चलते हैं।

रणापा का शाब्दिक अर्थ पैरबांसा है। इसलिए पैरबांसे पर किए जाने वाले नृत्य को “रणापा नृत्य” के नाम से जाना जाता है। यह गंजम जिले के चरवाहा समुदाय के लोगों में लोकप्रिय है। ठकुरानी यात्रा के त्यौहार और गिरिगोवर्धन पूजा के अवसर पर इस समुदाय के युवा बालकों द्वारा यह नृत्य किया जाता है। यह एक धार्मिक नृत्य है और विशेष रूप से देवी माँ “ठकुरानी” की पूजा-आराधना से सम्बद्ध है। नर्तक, इस नृत्य में बिना किसी अवलम्ब के लकड़ी के बांसों पर अनेक तरह की योग मुद्राओं का प्रदर्शन करते हैं।

—पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलकाता

Thakurani (Goddess) Jatra

The influence of tribal culture and civilization is seen in the folk dances of Ganjam District, Odisha. Perhaps from that point of view, Animal Dance and Jodi Sankha are the very popular and connected with the religious procession of Thakurani Jatra of Ganjam District.

Jodi Sankha is a unique presentation of rural music having Badya and Nrutya in combined form. While blowing the conch the artists display the harmony between the modulation of conch and the physical movement. The art is material, spirit is rustic and costumes are colourful. The other accompanying instruments are Dhol, Changu and Mahuri. Jodi Sankha taken a leading part in Thakurani Jatra as a symbol of austerity.

The spectacular animal mask dances are prevalent in the district of Ganjam, especially in the area of Bhanjanagar. The animal mask dance are of the tiger, bull, horse etc. All the masks are over size, colourful, decorative. Through the dance the people worships village goddess Thakurani popularly called “Bagdevi”. The dance is performed with various movements to the rhythms played by traditional drummers. Mostly the masks dancers lead the religious procession especially during Dusahara and “Thakurani Jatra”.

Ranapa literally means a stilt. So, the dance on the stilts is known as “Ranapa Nrutya”. This dance was prevalent among the cow-herd Community of Ganjam District. The young boys of the community used to perform this dance during the Thakurani Jatra Festival & Giriigobordhan Puja. It is a ritual dance and is closely associated with the worship of mother goddess “Thakurani”. The dancer displays a variety of yogic posture on the wooden stilts without any support.

Eastern Zonal Cultural Centre, Kolkata

बच्चों की प्रस्तुति

कोडयांचा कारवाँ

शरद ऋतु की उजली धूप में ढोलक की थाप पर मधुर संगीत की तान पर नाचते-गाते मछुआरों ने सुन्दर परिधानों से सुसज्जित होकर नीले समुन्द्र की आभा में अपनी नौकाएं डाल दी हैं। समुद्र की लहरों में डोलती हुई नौकाओं में बैठकर मछलियां पकड़ते हुए ये मछुआरे आनंद में मग्न हैं। उन्हें न बादलों की गड़गड़ाहट का डर है, न बारिश की बूंदों का, न तूफानी लहरों का। आनंद में मग्न झूमते नाचते-गाते मछुआरों का यह कारवाँ दरिया के विशाल वक्षस्थल पर निरंतर बढ़ता चला जा रहा है। कोड़ी राजा के आगमन के साथ ही सारे मछुआरे उनके स्वागत में हर्षोल्लास के साथ आनन्द विभोर हो उठते हैं। तो प्रस्तुत है महाराष्ट्र की कोड़ी परम्परा का दर्शाता एक लोकनृत्य— "कोडयांचा कारवाँ"।

—सर्वोदय कन्या विद्यालय, हस्तसाल गांव, दिल्ली

गुदुमबाजा

गुदुम, मध्य प्रदेश के डिण्डौरी, मण्डला और शहडौल आदि जिलों में रहने वाले आदिवासियों का अत्यन्त प्रिय पारम्परिक वाद्य है। गुदुम वाद्य के साथ किये जाने वाले मध्य प्रदेश के बैगा व गोंड जनजातियों के नृत्य और भी आकर्षक लगते हैं। गुदुम आदिवासी समाज के संस्कारों, मांगलिक उत्सवों व तीज-त्योहारों जैसे अवसरों पर ढुलिया जनजाति के द्वारा बजाया जाता है। गुदुम बाजा के संगत वाद्य शहनाई, बांसुरी, मजीरा एवं टिमकी हैं। गुदुम की शुरुआत धुन "भडगरचली" से होती है, उसके उपरान्त क्रमशः लावनी, दौड़, गुमक, तालबन्द व लहकी धुनों का समावेश होता है।

—उत्तर केन्द्रीय जोन सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

Children's Pageant

KODIYAN CHAKARVAN

In the warmth of the sunlight of the lively winter morning, the fishermen are ready to face the deep and unending sea. Their beautiful and colourful costumes and ornaments and decorated kayaks are reflecting their joy and enthusiasm. They have no fear of the deep sea nor can the gushing winds deter them from having the best catch of the fishes. Every wave coming towards their boats brings the message of a great catch which makes them dance with joy and ecstasy. They are braving the roar of the clouds, storm of the raindrops and the daring waves. The singing and dancing caravan of these fishermen is marching unstopably on the vast sea.

With the arrival of the Kodi king, the joy of the fishermen has no bounds.

Presenting to you traditional Maharashtrian folk dance called Kodiyancha Karvan.

—Govt. Sarvodaya Kanya Vidyalaya,
Hastsal Village, Delhi

Gudum Baja

Gudum is a traditional instrument which is more popular amongst the Dhulia tribals of Dindori, Mandla and Shadol districts in Madhya Pradesh. The Gond and Baiga tribal dances become more attractive in the company of Gudum instrument. Gudum players are duly acknowledged in their tribal society. It is played while performing social rituals and also on all auspicious occasions and festivals etc. The accompanying instruments are Shehnai, flute, Majira and Timki. The show begins with the playing of tune 'Dagarchali' followed by Lavani, Daud, Gumak, Talband and Lahaki, respectively.

—North Central Zone Cultural Centre, Allahabad

